बनारस से प्रकाशित

दिसंबर 2024

ISSN : 9334-0970

प्रान्ति इंडिया

+91 9453535495 | magazine@prantiindia.com

साहित्य की नई पीढ़ी की पहचान

संपादक

ए. के. प्रसाद

-: कार्यकारिणी :-

श्री ए. के. प्रसाद
संपादक

श्री प्रदीप प्रसाद
संरक्षक

श्री विवेक रंजन
प्रबंधक

श्री भोला शरण प्रसाद
सलाहकार

प्रान्ति इंडिया का पंजीयन : बी आर 35/0029626 तथा आईएसएसएन 9334-0970 है। इसका प्रधान कार्यालय सीवान (बिहार) के बगौरा - 841404 में तथा संपादकीय कार्यालय वाराणसी (उत्तरप्रदेश) के ईश्वरगंगी - 221001 में स्थित है।

यदि आपके पास कुछ सुझाव/शिकायत है तो विभागीय कार्रवाई के लिए eमेल पर अथवा मुख्य कार्यकारी अधिकारी को डाक द्वारा भेज सकते हैं।

ईमेल : magazine@prantiindia.com
संपर्क सूत्र : 9453535495

संपादक परिचय

इस पत्रिका के संपादक श्री ए. के. प्रसाद जी हैं। जिन्होंने अपने शब्दचयन, भाषा, संवेदना की ताजगी और रचना विन्यास में चौकस संधान जैसी विशेषताओं के कारण उन्होनें हिंदी साहित्य के सुधी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया और देश के कोने कोने में कवि सम्मेलनों में जाकर कविता सुनाकर सभी को आनंदित कर वाह-वाही लूटने लगे। ये अपने पिताजी के संरक्षण में एक प्रकाशक के रूप में इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में उदित हुए। इन्होंने साहित्य सेवा के उद्देश्य से सन् 2021 में प्रान्ति इंडिया की स्थापना की। इन्होंने कुछ दिन व्यक्तिगत रूप से कार्यों का अनुभव लिया फिर एक अनुभवी विषय-विशेषज्ञों, लेखकों और संपादकों की प्रतिबद्ध टीम का गठन कर गहन शोध एवं विश्लेषण के पश्चात् गद्य व पद्य, दोनों में सर्जनात्मक लेखन प्रकाशित करना शुरू किया। इनके अनुभवी टीम में पीएच.डी., एम.ए., बी.एड. इत्यादि डिग्रीधारी विशेषज्ञ शामिल हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य अपने सर्वोत्तम ज्ञान, अनुभव व प्रयासों को आपतक पहुँचाना है। प्रान्ति इंडिया की टीम द्वारा प्रदत्त आँकड़ों एवं तथ्यों को विभिन्न मानक एवं प्रामाणिक स्त्रोतों का उपयोग कर तैयार किया जाता है। इनका सदैव यह प्रयास रहता है कि सरल व सहज भाषा-शैली में आपके समक्ष प्रस्तुत हुआ जाए। प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की सर्वसम्मति से ए. के. प्रसाद के संपादकत्व में मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया का जुलाई 2024 में शुभारंभ हुआ।

संरक्षक परिचय

इस पत्रिका के संरक्षक श्री प्रदीप प्रसाद जी एक प्रतिष्ठित व्यवसायी और समाज सेवक हैं, जो सीवान (बिहार) में अपने व्यवसाय के माध्यम से समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। उनकी सहायता से प्रान्ति इंडिया ने सन् 2021 में अपनी यात्रा शुरू की, जिसका मुख्य उद्देश्य हिंदी साहित्य में उत्थान करना था। प्रान्ति इंडिया ने शुरू में पुस्तकों का संपादन शुरू किया, जिसमें नए और प्रतिभाशाली लेखकों को मंच प्रदान किया गया। इस प्रयास के माध्यम से, प्रान्ति इंडिया ने हिंदी साहित्य में एक नए युग की शुरुआत की। इसके बाद, जुलाई 2024 में, प्रान्ति इंडिया ने एक पत्रिका शुरू की, जिसका संपादन टीम की सर्वसम्मति से श्री ए. के. प्रसाद जी ने किया। इस पत्रिका ने हिंदी साहित्य में एक नए मुकाम की शुरुआत की, जहां नए और प्रतिभाशाली लेखकों को अपनी रचनाएं प्रकाशित करने का मौका मिला। संरक्षक के रूप में श्री प्रदीप प्रसाद जी का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने प्रान्ति इंडिया को एक मजबूत आधार प्रदान किया है, जिससे यह संगठन हिंदी साहित्य में उत्थान के लिए काम कर सकता है। उनकी दूरदर्शिता और मार्गदर्शन ने प्रान्ति इंडिया को एक नए मुकाम पर पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्री प्रदीप प्रसाद जी की सहायता और समर्थन के लिए हम आभारी हैं। उनकी दिशा में प्रान्ति इंडिया निरंतर आगे बढ़ रहा है और हिंदी साहित्य में उत्थान के लिए काम कर रहा है।

प्रबंधक परिचय

श्री विवेक रंजन जी एक अनुभवी और कुशल प्रबंधक हैं, जो प्रान्ति इंडिया में प्रबंधक के रूप में कार्यरत हैं। वह पत्रिका के शुरुआती दिनों से जुड़े हुए हैं और हमेशा प्रबंधन संबंधी सुझाव देते रहते हैं। श्री विवेक रंजन जी की प्रबंधन क्षमता और अनुभव ने प्रान्ति इंडिया को एक नए मुकाम पर पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने पत्रिका को ऊंचाई पर पहुंचने के लिए बहुत प्रयास किए हैं और उनके नेतृत्व में पत्रिका ने कई नए आयामों को छुआ है। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह हमेशा टीम के साथ मिलकर काम करते हैं और उनकी समस्याओं का समाधान करने में मदद करते हैं। उनकी नेतृत्व क्षमता और संचार कौशल ने प्रान्ति इंडिया की टीम को एकजुट और प्रेरित किया है। हम श्री विवेक रंजन जी को उनकी कुशलता और समर्पण के लिए धन्यवाद देते हैं। उनकी प्रबंधन क्षमता और अनुभव ने क्रांति इंडिया को एक नए मुकाम पर पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सलाहकार परिचय

श्री भोला शरण प्रसाद जी एक अनुभवी और जानकार व्यक्ति हैं, जो प्रान्ति इंडिया के सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं। वह प्रान्ति इंडिया के साथ तब से जुड़े हुए हैं जब से इसकी स्थापना हुई थी, और तब से ही वह हमारे लिए एक मार्गदर्शक और सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं। श्री भोला शरण प्रसाद जी की सलाह और मार्गदर्शन ने प्रान्ति इंडिया को कई जटिल समस्याओं से निपटने में मदद की है। उनकी अनुभवी और जानकार दृष्टिकोण ने हमें सही निर्णय लेने में मदद की है और हमें आगे बढ़ने में प्रेरित किया है। उनकी सलाह हमेशा विचारशील और तर्कसंगत होती है, जो हमें हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती है। विशेष रूप से, श्री भोला शरण प्रसाद जी पत्रिका की गुणवत्ता और भाषा चयन की शैली का मानक तय करने में काफी मदद करते हैं। उनकी दृष्टिकोण ने हमें पत्रिका की गुणवत्ता को बढ़ाने में मदद की है और हमें अपने पाठकों को उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री प्रदान करने में मदद की है। उनकी सलाह और मार्गदर्शन ने प्रान्ति इंडिया को एक नए मुकाम पर पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी अनुभवी और जानकार दृष्टिकोण ने हमें बहुत कुछ सिखाया है और हमें आगे बढ़ने में मदद की है। हम श्री भोला शरण प्रसाद जी को उनकी सलाह और मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद देते हैं। उनकी अनुभवी और जानकार दृष्टिकोण ने हमें बहुत कुछ सिखाया है और हमें आगे बढ़ने में मदद की है। हम उनके अनुभवी दृष्टिकोण के आभारी हैं।

संपादकीय..!

प्रिय पाठक,

हिन्दी साहित्य के प्रति समर्पित साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया की विकास हेतु हमारी कार्यकारिणी प्रतिबद्ध है। हमारा उद्देश्य हिन्दी साहित्य को बढ़ावा देना और साहित्यिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना है। हमारी कोशिश रहती है कि नव उदित साहित्यकार की लेखनी हमेशा जारी रहनी चाहिए। हमारा मानना है कि साहित्य की शक्ति समाज को बदलने में मदद कर सकती है, और हमारा उद्देश्य हिन्दी साहित्य को एक मजबूत और समृद्ध साहित्यिक परंपरा के रूप में विकसित करना है। हमारा उद्देश्य हिन्दी साहित्य को एक व्यापक और समृद्ध साहित्यिक परंपरा के रूप में विकसित करना है, जो समाज को बदलने में मदद कर सके। हमें विश्वास है कि हमारी कोशिशें हिन्दी साहित्य को एक नए आयाम पर ले जाएंगी और हमारे समाज को एक बेहतर भविष्य की ओर ले जाएंगी।

संपादक
प्रान्ति इंडिया एण्ड कम्पनी
बग़ौरा, सीवान, बिहार - 841404

काबिलियत

- डॉ. पूजा अलापुरिया
हिन्दी विभागाध्यक्ष, नवी मुंबई।

रागिनी के बेटा हुआ। हॉस्पिटल से घर आई तो पूरा घर खुशियों में सराबोर था। जच्चा-बच्चा घर पहुँचे ही थे कि पीछे-पीछे ढोलक की थपकियाँ सुनाई देने लगी। रागिनी की सास ऊषा ने बाहर आ कर देखा तो हिजड़ों की मंडली घर के बाहर बने चबूतरे पर बैठे हैं। पोते की खुशी और किन्नरों के आगमन पर ऊषा फूली न समा रही थी।

ऊषा ने हिजड़ों से कहा, "खूब नाचो और दिल खोलकर गाओ, देखो कोई कमी न रह जाए। 'नेक' मन चाहा मिलेगा।"
बातों-बातों में ऊषा की दृष्टि मोहिनी को ढूँढ़ने लगी और सरदार से पूछ बैठी, "किधर है मोहिनी? तुम्हारी मंडली की जान।" सरदार ने बड़ी नज़ाकत से मुस्कुराते हुए ताली बजाई और चमचमाती आँखों को मटकाते हुए कहा, "मोहिनी !!! हम्मम, हमारी मंडली की शान थी, अब तो अपनी काबिलीयत से बैंक में अधिकारी बन गई है।" जवाब सुन ऊषा स्तब्ध खड़ी रह गई।

मेरा मन

कार्तिक नितिन शर्मा

गांव में एक साधारण सी लड़की, राधा, रहती थी। उसकी आँखों में सपनों की चमक थी, लेकिन उसके परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। राधा हमेशा चाहती थी कि वह अपने गांव के बच्चों को शिक्षा दे सके। वह जानती थी कि शिक्षा ही अपने और अपने गांव के भविष्य को संवारने का एकमात्र रास्ता है।

एक दिन, राधा ने निर्णय लिया कि वह कुछ कर के दिखाएगी। उसने अपनी माँ से थोड़े पैसे उधार लिए और गाँव के पुराने स्कूल में कुछ किताबें खरीदी। वह बच्चों को पढ़ाने के लिए हर शाम गाँव के चौक पर एकत्रित होने लगी। धीरे-धीरे, बच्चे उसकी ओर खींचने लगे। राधा की मेहनत रंग लाई और गांव के बच्चे उसकी क्लास में आने लगे।

वह बच्चों को न केवल पढ़ाई में बल्कि जीवन के महत्वपूर्ण पाठ भी सिखाती। उसकी बातों में एक खास ताकत थी, जिससे बच्चे प्रेरित होते थे। राधा का उत्साह देखकर गाँव के बड़े भी प्रभावित हुए और उन्होंने उसका सहयोग करना शुरु कर दिया।

कुछ महीने बाद, राधा ने गाँव के बच्चों को स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए सबको एकत्रित किया। सभी ने मिलकर पैसे जुटाए और गांव के सभी बच्चे स्कूल जाने लगे। राधा की हर कोशिश ने सबके दिलों में उम्मीद जगा दी।

एक दिन, गांव के मुखिया ने राधा को सम्मानित किया और कहा, "तुमने हमारे गांव के बच्चों के भविष्य को रोशन किया है।" उस दिन राधा ने महसूस किया कि उसकी मेहनत और सपनों ने सच में बदलाव ला दिया है। अब उसने न केवल अपनी, बल्कि सभी बच्चों की जिंदगी में एक नया रास्ता दिखाया था।

इस लघुकथा से यह संदेश मिलता है कि अगर हमारे मन में कुछ करने की चाह हो, तो कठिनाइयाँ भी हमें रोक नहीं सकतीं। हर सपना सच हो सकता है, बस जरूरी है कि हम उसे पूरा करने के लिए मेहनत करें।

दो हिस्सा

ऋतु कमल मिश्र

कहानी.......का मतलब... पात्रों के अनगिनत संवाद.....
कुछ प्रेरणा देते हुए और कुछ हतोउत्साहित करते हुए......
और कुछ यूँही मूक दर्शक की भांति निहारते हुए........!!

मेरी ये कहानी, उन दो लोगों के मनोभावों पर आधारित है, जो तो जीवन जी रहे थे पर.....अलग-अलग नज़रिये से......

मेरी कहानी के पहले पात्र हैं.......
गली नं. 4, कमल विहार कॉलोनी, म.प्र., निवासी, , नाम अशोक कुमार, उम्र 86, भरा पूरा परिवार दो बेटे, दो बेटियाँ, सभी बच्चे अच्छी-अच्छी जॉब में कोई सरकारी विभाग में अधिकारी, तो कोई टीचर, तो कोई मल्टीनेशनल कंपनी में मैनेजर, और कोई डॉक्टर......और इनकी पत्नी भी, एक बहुत ही प्रसिद्ध चित्रकारा हैं.....

और अब अशोक जी के बारे में मैं क्या कहूँ, वो राज्य के मुख्य सचिव जैसे पद से रिटायर होकर परिवार के परम सुख का आनंद ले रहे हैं........रोज़ सुबह-शाम टहलना....और रेडियों में लता जी के गाने लगा के, गार्डन में कुर्सी डालकर, इत्मिनान से बैठकर गाना सुनना बहुत पसंद है उन्हें....

आपको लग रहा होगा, इस कहानी में विशेष क्या है.....
....विशेष तो कुछ नहीं है पर जो अगला किद्दार, क्या है, कौन है, मैं बताता हूँ.....
उसी गली नम्बर 4 के आख़री मुहाने पर एक वृद्ध जो लगभग 87 के रहे होंगें, रहते थे.......
कहाँ से हैं वो, ये पूछना बनता है आपका,.....
पहले उनका नाम बताता हूँ,...
उनका नाम है....जगन प्रसाद......
जगन जी रहते थे, अपने 2 फ़ीट/2 फीट, के आलीशान झिल्लियों वाले मकान में जो उनको किसी राहगीर में तोहफ़े में दी थी।
इन झिल्लियों के मकान के पीछे की एक कहानी है,
जो अब मैं आपको बताता हूँ,.......
जगन प्रसाद जी का भी पहले एक भरा पूरा परिवार था, 2 बेटे, 1 बेटी, एक प्यारी सी धर्मपत्नी भी थीं, पर कुछ साल पहले हुई एक घटना में उनका परिवार छूट गया, या कहिए टूट गया।
घटना थी, उनके रिटायर होने की, और रिटायर होने के बाद सारी जमा पूँजी अपने बच्चों के नाम कर देने की.....
अपने लिए बस, उन्होंने एक दूसरे का साथ रख लिए था, ...और उनके बच्चे भी बहुत ज़िम्मेदार थे, जैसे ही माँ बाप का प्यार(ज़ायदाद) मिल गई........,
माँ और बाप को बड़े प्यार से भ्रमण के लिए भेज दिया.......भ्रमण भी हरिद्वार काशी नहीं,..... बल्कि......सड़कों की लंबाई-चौड़ाई नापने....... भटकने......शहर के रास्तों पर.......,

जिन माँ बाप ने एक दूध की बॉटल के लिए पूरी गाय खरीद ली थी, कि बच्चों को अच्छा पोषण मिले.......,
वो आज, रोटी के 1/4 हिस्से के लिए गली-गली घूमते थे, हाथ में भिक्षा पात्र लिए हुए, ...
इसी व्यस्त और आरामदायक जीवन के चलते उनकी जीवनसाथी, उनकी धर्मपत्नी ने इक़ रोज़ रास्ते में ही दम तोड़ दिया,........उनको जलाने के लिए भी जगन जी को लकड़ियाँ मांगनी पड़ी थी.....तब जाकर उनका अन्तिमसंस्कार हुआ।
.......पर इतना होने के बाद भी वो अपनी पत्नी की आख़री इच्छा के लिए जी रहे थे.....,उनकी पत्नी की इच्छा थी, कि वो उनके साथ जो गाना हमेशा गाते थे, गुनगुनाते थे, उस गाने को रोज़ वो गुनगुनायें और गायें,.....जब तक उनको भगवान का बुलावा नहीं आ जाता,....वो अपना ख़याल रखेंगे,
जगन प्रसाद जी.... निरंतर अभी तक वो गाना गुनगुनाते रहते हैं.....जीवन का आनंद यादों के साथ लेते रहते है।

अब आप सोचेंगे इन दोनों व्यक्तियों में क्या विशेषता है, और क्या समानता है, जो इनकी कहानी मैं आपको सुना रहा हूँ।

पहली समानता..... इनकी गली एक है,.....
दूसरी समानता......इनकी उम्र भी लगभग समान है,.....
तीसरी समानता..... दोनों जो गाना सुनते हैं, उनके बोल एक समान है,...........
नाम गुम जाएगा, चेहरा ये बदल जायेगा......🎼🎶🎼
मेरी आवाज ही पहचान है.......गर याद रहे......🎶🎼🎶

ये तो थी अशोक जी और जगन जी के बीच की समानताएँ, ...पर कुछ और भी था, जो इन दो अलग-अलग ज़िंदगानीयों को जोड़कर देखने के लिए मुझे मजबूर कर रहा था।

वो क्या था, मैं आपको बताता हूँ........
अशोक जी की आदत आप जानते ही हैं.... स्वस्थ और सन्तुलित जीवन शैली उनकी विशेषता थी....तन मन दोनों से ख़ुश.....।
और जगन जी की भी जीवन शैली आप अभी तक जान ही गये होंगे,.....विपरीत परिस्थितियों से बेइंतहा इश्क़ निभाना, क्योंकि किसी से किया हुआ वादा, ज़िन्दगी से ज़्यादा मायने रखता है....।

अपनी कहानी को विराम देते हुए, एक बात कहना चाहता हूँ,.....क्यों ऐसा होता है, कुछ लोगों के साथ अच्छा होता है, और कुछ लोगों के साथ बुरा,.....ये अपना कर्म है,....या अपनों के द्वारा किया हुआ कर्म,....जहाँ एक ओर अशोक जी हैं......सुखी स्वस्थ......हर्ष के साथ जीवन का आनंद लेते हुए........,और एक ओर जगन जी हैं, जो अपनों द्वारा दी गई इस मुफ़लिसी में भी, अपनी पत्नी से किये हुए वादे के लिए खुश रहने को मजबूर,...या कहूँ मजबूत,...या कहूँ चट्टान से डटे हुए.....।
ऐसा दृश्य बहुत से शहरों में होगा देखने को.........जो मेरे शहर में दिखा, उसका एक छोटा सा हिस्सा, मैंने आपको सुनाया या कहिये बताया।
बताएगा कैसा लगा....इन दो अलग ज़िंदगानी के, दो अलग-अलग पहलू।

सफलता

बिलासपुर छत्तीसगढ़ की मूल निवासी डॉ शीला शर्मा जी का उपनाम बबली है। ये बहुत अच्छा लिखती हैं।

- संपादक

हर मानसिक स्थिति में सफलता की एक ही कुंजी है, और वो है एकाग्रता। संसार में जितने भी आविष्कार होते हैं और जो भी आज मानव ने मानव समाज को सुखी बनाने के लिए चकित करने वाले साधनों की खोज की है उन सब की सफलता की कुंजी उनमें एकाग्रता का होना है जहां आप अपने में एकाग्रता पैदा करेंगे वहां आप एक नया अविष्कार करेंगे एकाग्रता से आप सफलता की अंतिम सीढ़ी तक पहुंच सकते हैं जो काम कल आपके लिए कठिन था असंभव था वही काम मन में एकाग्रता आने पर आज सरल व सुलभ बन जाता है। परीक्षा कक्ष में बैठे विद्यार्थी के दिमाग में घूम रहे किसी गाने के विचार उसका ध्यान भंग कर सकते हैं।

बेहद जरूरी समझौता तैयार कर रहे व्यापारी को पत्नी के साथ हुई बहस का ख्याल परेशान कर सकता है। न्यायधीश, इस बात से विचलित हो सकता है कि सामने खड़ा किशोर, उसके बेटे जैसा दिखता है। एकाग्रता की कमी का प्रत्यक्ष प्रभाव कार्यक्षमता व परिणाम पर पड़ता है। आमतौर पर लोगों को एकाग्र मस्तिष्क की सफलता के पीछे का कारण नहीं मालूम होता। एकाग्र मस्तिष्क, परेशानियों को ज्यादा तेजी से सुलझा लेता है। बल्कि, यह कहा जाए कि एकाग्र ऊर्जा के कारण परेशानियां खुद-ब-खुद गायब हो जाती हैं और कई बार उन्हें सुलझाने की आवश्यकता ही नहीं होती।

एकाग्र मन अक्सर कम संकेंद्रित मस्तिष्क की तुलना में अवसरों को ज्यादा आकर्षित करता है। एकाग्र रहने वाले व्यक्ति को प्रेरणा भी मिलती है। एकाग्रता, हमारी शक्तियों को जागृत करती है और मुश्किलों को हटाकर हमारे लिए मार्ग तैयार करती है। एकाग्रता ही सफलता की एकमात्र कुंजी है। ध्यान के दौरान मस्तिष्क एकदम शांत और स्थिर होता है। योग की शिक्षा में आपको एकाग्रता विकसित करने का पाठ पढ़ाया जाता हैं। एकाग्रता का मतलब है, अपनी मानसिक व भावनात्मक ऊर्जा को दूसरे कामों में न लगाना। इसके अलावा, इसमें किसी एक विषय पर जागरुकता और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को विकसित किया जाता है। आत्मविश्वास और एकाग्रता से छिपी हुई शक्तियों प्रकट होती है इससे जिस काम में भी हाथ डालेंगे उसमें सफलता निश्चित है।

एकाग्रता में ऊर्जा प्रवाह का प्रदर्शन देखा जा सकता है। जब एकाग्रता अधिक स्थायी हो जाती है तो यह अभ्यास का हिस्सा बन जाती है। योगी को उस वस्तु की पहचान हो जाती है, जो एकाग्रता के लिए जरूरी होती है। अभ्यास के साथ-साथ एकाग्रता को कोई बाहरी व्यवधान प्रभावित नहीं कर पाता। एकाग्रता के लिए यथार्थ को पहचानिए। हम अनंत प्रकाश, प्रेम व ईश्वरीय देन हैं। इन्हीं सब चीजों को ध्यान में रखते हुए हमें एकाग्रता का स्तर विकसित करना चाहिए। एकाग्रता को प्रभावी बनाने के लिए हमें मस्तिष्क को नियत गति व स्थिरता की ओर केंद्रित करना होगा। इस अवस्था में हमारी इंद्रियां स्वत: स्थिर हो जाएंगी।

जब मस्तिष्क केंद्रित हो जाए, इसके द्वारा किया कोई भी कार्य सिद्ध होगा।

सीनियर सिटीजन

डॉ.पंकज 'साहिल'...... की कलम से

जेठ का महीना था तपा देने वाली गर्मी जिसमे साँस लेना भी कठिन हो रहा था शरीर पसीने से तर-ब-तर हुआ जा रहा था। हवा का कहीं से कहीं तक भी कोई नामोनिशान नहीं था। लू के थपेड़े शरीर में और ज्वाला प्रज्ज्वलित करने का काम कर रहे थे। रमन को गर्मियों की छुट्टियों में अपने गाँव जाना था सो वह रिज़र्वेशन करवाने के लिए लखनऊ में भारतीय रेलवे के रिज़र्वेशन सेंटर पर पहुँचा यह क्या वहाँ का नज़ारा देखते ही रमन को चक्कर आ गए गला सूख गया दम घुटा जा रहा था क्योंकि रिज़र्वेशन सेंटर पर बहुत ज़्यादा भीड़ थी।

सभी को जल्दी थी टिकट खरीदने की हर एक पंक्ति में धक्का-मुक्की हो रही थी सभी एक दूसरे पर चिल्ला रहे थे। रमन भी जैसे-तैसे करके एक पंक्ति में खड़ा होकर अपनी बारी की प्रतीक्षा करने लगा। दोपहर के लगभग दो बज रहे थे और गर्मी अपने पूरे चरम पर थी। ख़ैर जैसे-तैसे रमन कुछ आगे खिसका लेकिन अभी भी टिकट खिड़की तक पहुँच पाने की कल्पना करना भी असंभव सा प्रतीत हो रहा था। अचानक ही रमन की नज़र अपने से चार व्यक्तियों के आगे लगे एक वृद्ध व्यक्ति पर पड़ी जो बड़े ही जोश और उत्साह के साथ अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनकी नज़र भी अकस्मात मुझ पर आ पड़ी और मेरी हालत देखकर वे बोले की बेटा क्या हुआ प्यास लग

रही है इससे पहले कि रमन कुछ कह पाता उन्होंने पानी की बोतल रमन की ओर बढ़ा दी रमन ने एक शब्द भी कहे बिना पानी की बोतल लपकी और पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई और वृद्ध व्यक्ति का आभार व्यक्त करने हेतु जैसे ही हाथ जोड़ने चाहे उन्होंने मना कर दिया और कहा बेटा यह तो मेरा कर्तव्य है मैंने तुम पर कोई एहसान नहीं किया। रमन उनके इस स्वभाव को देखकर मौन ही रह गया। अचानक ही रमन की नज़र सीनियर सिटीज़न की पंक्ति पर पड़ी जो बिल्कुल आखिर में थी और जिसमे केवल चार-पाँच व्यक्ति ही खड़े हुए थे। रमन तपाक से बोला अंकल आप तो सीनियर सिटीज़न हैं जाइए अपनी पंक्ति में लग जाइए और आराम से टिकट ले लीजिए। रमन की बात सुनकर उस वृद्ध व्यक्ति ने उत्तर दिया बेटा वह पंक्ति उन वृद्धजनों के लिए है जो शारीरिक रूप से सक्षम नहीं हैं भला मैं तो ईश्वर की कृपा से पिचहत्तर वर्ष की आयु में भी बिल्कुल स्वस्थ हूँ मुझे कोई शारीरिक दुर्बलता भी नहीं है तो मैं क्यों उस पंक्ति में जाऊँ मैं अपना नंबर आने पर इसी खिड़की से ही टिकट खरीदूँगा और रही बात तुम्हारी तो तुम बहुत थक गए हो मैं पंक्ति में लगा ही हुआ हूँ तुम आराम से बाहर जाकर बैठ जाओ जब नंबर आएगा तो मैं तुम्हें भी बुला लूँगा। यह सुनकर रमन निःशब्द होकर उनकी ओर नज़र भरकर देख भी न पाया कि अंकल ने फिर से पानी की बोतल रमन की ओर बढ़ा दी। रमन भीतर ही भीतर सोचने लगा कि वास्तव में व्यक्ति तन से वृद्ध होता है मन से नहीं।

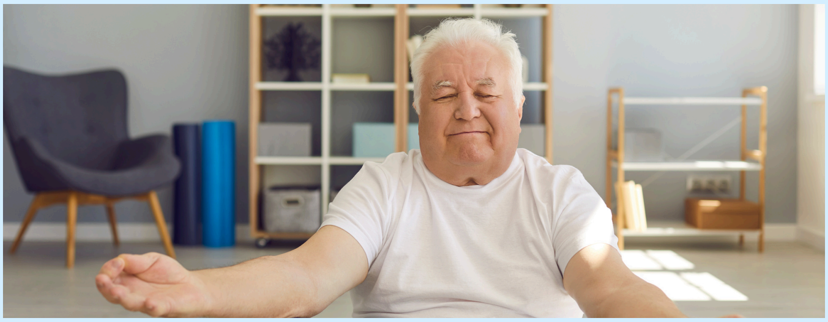

देवकली का दर्द

डॉ० हरिवंश शर्मा @ प्राचार्य, आदर्श जनता महाविद्यालय देवकली - खीरी

12 बरस की राजकुमारी देवकली का विवाह राजकुमार प्रयागराज से हो चुका था। हर पुत्री के माता - पिता के लिए यही वह समय होता है जब वह कन्यादान करके सन्तुष्ट महसूस करता है । राजा देवज्ञ और उनकी पत्नी भी भाव विभोर हो रहे थे । आँखे नम थीं । कलेजे पर पत्थर रखकर विदाई की रस्म पूरी कराई । देवकली के साथ साथ तमाम सौगातें दास - दासियां भी भेजी गईं । देवकली अकेली सन्तान थी फिर भी रिश्ते की दादी ने जाते समय कहा था कि बेटी का ससुराल ही सब कुछ होता है । उसे मायके को अब भुलाना पड़ेगा। देवकली एक विदुषी महिला थी । उन्हें ज्ञात था कि माता - पिता से बढ़कर कुछ नहीं होता फिर जब वह अपने पिता की एकमात्र पुत्री थी । भाई न होने के कारण उनको अपनी जिम्मेदारी का अहसास था कि माता - पिता का भी वही सहारा है । आखिर समय बीता उन्होंने पति प्रयागराज से मायके जाकर माता - पिता को देख आने की इच्छा ज़ाहिर की । प्रयागराज मान गए और उनको भेजने की तैयारी अपने परिजनों को बताई । कुछ बुज़ुर्ग महिलाएं उन्हे ताना मारने से भला क्यों चूकती सो प्रयाग राज का मन भी बदलने लगा । तैयारियां रोक दी । जब देवकली को पता लगा कि वे इस बात पर राज़ी नहीं हैं तो यह देखते हुए अपने मायके से आए डोली कहारों से कहकर जाने की ठान ली । आखिरकार वे मायके चली आईं । प्रयागराज भी उन्हे भरे मन से चाहकर भी नहीं रोक सके ।

आषाढ़ी को मायके आई देवकली को अब सावन का महीना भी बीत चला । प्रयागराज ने न तो उनकी कोई खोज खबर ली और न ही विदाई का संदेशा। देवकली के मायके में भी औरतें खुसर - पुसर करने लगीं "देखो लगता है अपने पति से लड़कर आई है ।" कुछ तो इससे आगे तक की सोंच रखने लगीं । मां तो आखिर मां होती है । देवकली की मां तक ये गर्म हवाएं आने लगी । उधर जहाँ सावन में चारों तरफ पेड़ों पर झूले पड़े थे , मल्हार गीतों से वातावरण संगीतमय हो उठा था । देवकली अपने महल की छत के एक कोने में अपनी पति की बाट जोह रही थी । उसे पता था कि माता - पिता की सेवा करना भी उसका कर्तव्य है और ससुराल के दायित्व भी उसी के हैं।

आखिरकार चौमासा बीतने पर राजा देवज्ञ ने कुशलक्षेम पूछते हुए प्रयागराज को एक मार्मिक पत्र भेजा जिसमें देवकली को शीघ्र भेजने की बात लिखी गई थी । मां का विनय निवेदन था। पत्र देवकली के हाथ जा लगा । पत्रवाहक को थोड़ी देर रुकने को कहकर पत्र अपने हाथ में ले लिया । पिता के हृदय की पीड़ा से भरे पत्र को अपने कक्ष मे ले आई और दूसरा पत्र लिखा - " मुझे आज लगा कि बेटियां आखिर पराई क्यों होती है फिर भी मैं अपने पिता को इतना लज्जित नहीं देख सकती । यदि आप मुझे हृदय के किसी कोने में भी स्थान देते हैं तो आप स्वयं मुझे विदा कराने के लिये आयें जिससे मेंरे माता - पिता का मान ही नहीं अपितु आपका राजवंश का गौरव भी बना रहेगा। हमारी इस बात को आप अपनी बहन के भाई और अपनी पुत्री के पिता होने के अहसास को रखकर जरूर सोचिएगा । आपकी ही देवकली ।"

प्रयागराज के साथ देवकली विदा हो गई फिर वह मायके नहीं आई । रह गई तो सिर्फ शेष - अशेष यादें। राजा देवज्ञ व माता के जाने के बाद रह गये सिर्फ और सिर्फ किले के खण्डहर , टूटे गुम्बद और एक तालाब । इस स्थान का नाम पड़ा देवकली ।

संयुक्त परिवार

डॉ अखिलेश कुमार,
फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

खातिर औलाद के मनुष्य रिश्ते खून के खास में भी, खटाई घोल लेता है।
ब्याह होत न्यारौ चले, नौकरी में ऐंठो चले,
चले चाल भाँति-भाँति, घर द्वार दीवार, माँ-बाप प्यार के दुलार का भी मोल तोल देता है।
भाव खाए बात-बात, पूँछो कछु ताव खाय,
लाज न लजाय ढीठ मन ही मन मुस्कराय,
हर बात का जवाब, यों गोल-गोल देता है।
आँखियन में झाँक रहो, थरथराय संगिनी से देखो कैसे काँप रहो,
रखे ख्याल ससुराल बाल बच्चन कराये सैर,
टुकुर-टुकुर देख रही खड़ी द्वार अम्मा की,
अश्रुपूर्ण दृष्टि से मुँह फेर लेता है।
द्वार भाई टटिया, आँगन में खटिया, साइकिल सवारी,
बिन रजाई ठंड में किन्तु वह घमंड में,
सोफा संग टोपा भी, झपट छीन लेता है।
तमाड़ी और कंसा खटारे सो पंखा, कुठिला भर अनाज,
सोटा के खौफ में, सब हड़प लेता है।
बड़े होकर पनपते हैं इन्हीं परिवार में, स्वार्थ के बीज बच्चों में,
खटकते हैं माँ-बाप भी उनको, अहमियत अति धन को देने में।
तजुर्बे जिंदगी माँ-बाप की जो नादान अनुपयोगी कील काँटा समझते हैं,
वही तो सलाह-ए-नेक व दुआओं को,
दर-बदर जीवन भर भटकते हैं।
हटाना राह से उनको, या दूर रखने में ही, जो मूर्ख अपनी भलाई समझते हैं।
बेरुखी से किनारा कर उघारा कर दिया करतीं स्वयं की औलाद फिर उनको,
तो बुढ़ापे में बेबसी की बताने को व्यथा अपनी,
गुजारे को पता उनका वृद्धाश्रम ही अवशेष होता है।
बोए पेड़ बबूल के अब कहता फिर रहा लंगूर सा,
कि रस आम अंगूर अच्छा है।
सुधारो परवरिश उनकी घड़ा मिट्टी का कच्चा है,
बड़ों से सीखते बच्चे उसी का लौट आना भी पक्का है।
धरा क्या एकांकी जीवन में, साझा घरबार सच्चा है।
फ़्लैट में घुटे दम लगे डिब्बा, दादी न बब्बा,
यहाँ कहाँ धरे चाची और चच्चा,
अधिक होय ख़र्चा, बस गच्चा ही गच्चा है।
जमाने से फिर वही गाँव अपने का,
संयुक्त परिवार अच्छा है।।*

माँ

बलविंदर बालम
गुरदासपुर, पंजाब

रजनी का पति उच्च पदासीन था। वह शादी से दस वर्ष बाद ही परमात्मा को प्यार हो गया, अचानक हृदय गति रुकने से। उच्चाधिकारी होने के नाते घर का वातावरण, रहन सहन ऊँचे स्तर का था। रजनी शिक्षिता तो थी परन्तु उसने कोई भी नौकरी नहीं की थी।

रजनी का आठ वर्ष का एक लड़का था राजेश। वह अपने पुत्र की सुख-सुविधा के लिए तन-मन-धन से कुर्बान थी। उसने एक प्राईवेट कालेज में नौकरी कर ली थी। राजेश की खुशी ही उसकी खुशी थी। एक माँ के फ़र्ज़ ही नहीं बल्कि पिता के फ़र्ज़ भी सहर्ष सहृदता से निभाती।

राजेश उसकी ज़िंदगी थी, उसके सांसों की ज़रूरत, उसके मोह की क़ीमत, उसके नयनों की ज्योति। उनके लिए राजेश मन्दिर की भांति था तथा वह एक पुजारन की तरह उसकी सेवा सुश्रूषा में सब कुछ कुर्बान करने के लिए बंदगी को समर्पित।

वयस्क होकर राजेश उच्च शिक्षा आर्जित करके सरकारी पद के फ़र्ज़ निभा रहा था। रजनी ने अपने पुत्र की शादी धूमधाम एवं अपनी हैसियत से बढ़कर भारी स्वर्च से की थी। रिश्तेदारों में, शहर में, रजनी की कार्यगुज़ारी प्रशंसा की बुलंदी पर थी।

राजेश की पत्नी सुन्दर, सुशील थी। वह भी सरकारी पद पर कार्यरत थी। लगभग एक वर्ष के पश्चात रजनी के आंगन में पोते की आमद ने खुशियों के बंदनवार सजा दिए। रजनी की खुशी अम्बर को छुने लगी। वह परमात्मा का शुक्र करती कि उसको दूसरा जन्म देखने का अवसर मिला। पोता मानव का दूसरा जन्म होता है। उसने अपने पोते का नाम रवि रखा। नाम को सार्थिक करता हुआ, उसके जीवन में सवेरा ही सवेरा दस्तक दे रहा था।

समय हिरनी की भांति कुलाचे भरता हुआ भागता चला गया। रजनी का पोता लगभग दस वर्ष का हो गया था। वह पोते की प्रत्येक ख़्वाहिश पर जान देती थी। जिस तरह संसार में दादी-पोते का स्नेह-मोह होता है, उससे भी ज़्यादा। घर के प्रत्येक काम में रजनी अपनी हिम्मत को हर्षत से ज़रब देकर दौड़ती। पुत्र-वुधु की एक सेविका की भांति कार्य करती हुई खुशी की मांज़िल की ओर बढ़ती जाती, जैसे वह जन्नत की पर्याय हो।

रजनी सेवा निवृत हो गई। वह वृद्ध होने के बावजूद भी घर-बाहर को अनिवार्य कार्यो के लिए हाथ बंटाती न थकती। खुशी हृदय में हो तो थकावट पंख लगा कर उड़ जाती है। उसने अपनी सेवा निवृति के अवसर पर मिली समस्त धनराशि राजेश के नाम करवा दी।

रजनी अब लगभग 65 वर्ष की बहारें पार कर चुकी थी। उसको कई बीमारियों ने घेर लिया था। ब्लड प्रेशर, शुगर, गुरदों की बीमारी, नज़र का कमज़ोर होना इत्यादि। अब उसको चलना भी मुशिकल लगता। आसरा भाल कर ही चलती। बैड चारपाई का आसरा ही उसकी ज़िंदगी बन गया। एक दिन राजेश की पत्नी उसको प्यार तथा धैर्य से कहने लगी, मैंने कहा जी, माता जी सारा दिन खांसते रहते हैं। कई बिमारियां हैं, रवि उनसे ही खेलता रहता है। वह रवि को बार-बार चूमती रहती है, यह ठीक नहीं। मेरा ईशारा आप समझ

ही गए होंगे। हम दोनें ड्यूटी पर चले जाते हैं, रवि स्कूल चला जाता है। थके मादे आकर माता जी को संभालना कितना मुश्किल होता है। कम-ज-कम मैं तों नहीं संभाल सकती। इन्सान के कुछ अपने भी मनोंरंजन होते है। आजकल नौकर रखने भी तो ठीक नहीं। तनख्वाह बहुत मांगते हैं। मैं तो कहती हूं कि माता जी को वृद्धाश्रमा में छोड़ आते हैं। वहां इनकी देखभाल भी ठीक होगी हम भी आज़ाद। आया-गया आज़ादी से रह सकता है। वहां इनका दिल भी लग जाएगा।

परन्तु मेरी बात सुन, जिस माँ ने अनेक कष्ट झेल कर हमको यहां तक पहुंचाया। अब उनको इस उम्र में वृद्धाश्रमा में छोड़ आएं। कोई अच्छी बात नहीं। समाज क्या कहेगा? रिश्तेदार क्या कहेंगे? पोते के साथ माँ का बहुत मोह-स्नेह है। उसके बगैर तो वह मर जाएगी। वह तो उसकी ज़िंदगी है। पोते के साथ उसका दिन चढ़ता है, रात होती है। माँ को आश्रम में भेजना ठीक नहीं।

परन्तु पत्नी ने इतना मज़बूर कर दिया कि राजेश को सारे हथियार फैंकने पड़े। एक दिन शाम को बिस्तर पर सरहाने तकिए की ढ़ारस लगा कर बैठी माँ के पास राजेश जा बैठा। कलेजे को सीने से बाहर निकाल कर, हिम्मत का आसमां बांध कर माँ को कहने लगा, माँ एक बात करनी है।

हां, बेटा, बनाओ, क्या बात है? तेरी कौन सी बात मैंने आज तक नहीं मानी बेटा, जल्दी बता क्या बात हैं? माँ, क्या बताऊँ?

बता ना मेरा पुत्र, खुल कर बात कर, डर-डर के बात क्यों कर रहा पुत्र। आज तक तो ऐसी घबराहट में मेंरे साथ कभी बात नहीं की, बता मेरा पुत्र क्या बात है? मैं तेरी प्रत्येक शर्त पूरी करूंगी मेंरे लाल! आखिर बात है क्या? जिसको जल्दी नहीं बता रहा।ऊपर से राजेश की पत्नी भी आ जाती है

तथा उसने हिचकचाहट के पंख कुतरते हुए दलेरी के साथ सय्याद की भांति कहा मां जी, दरअसल बात यह है कि हम चाहते हैं आप वृद्धाश्रम में चले जाएं। वहां आपकी देखभाल अच्छी तरह से होगी। खर्च तो हम देगें ही। घर में आपकी देखभाल अच्छी तरह से नहीं होती कई कमियां (त्रृटियां) रह जाती हैं। घर में आपकी देखभाल करनी मुश्किल होती है। हम चाहते हैं आपका वृद्धश्रम की अच्छी सुविधायों में छोड़ आएं। आपका वहां दिल भी लगा रहेगा। आपको वहां मिलने आते रहेंगे।
मां ने हंसते हुए झट से कहा, हां, पुत्र में तैयार हूं। यह तो मैं भी सोचती हूं। महसूस करती हूं पुत्र, आप मुझे वृद्धाश्रम में छोड़ आएं। मुझे कोई एतराज नहीं। आप बिल्कुल ठीक कहते हैं।
मां की डबडबाई चूल्हे जैसी आंखों से जैसे धूआं निकल रहा हो। उसने चारों ओर देखा, पुत्र-वधु को देखा, पोते की ओर देखा और नज़रे नीचे करते हुए खून के आंसू कलेजे के कासे में बहाती चली गई शायद अपने पति की याद में, जैसे पति उसको आर्शीवाद दे रहा हो, बल दे रहा हो, हिम्मत तथा धैर्य की शक्ति दे रहा हो।
पुत्र वधु ने जुर्रत से कहा, मां जी, आज शनिवार है तथा सोमवार हम आपको आश्रम में छोड़ आएं। मुझे कोइ एतराज नहीं, आप बिल्कुल ठीक कहते हैं।
मां की डबडबाई चूल्हे जैसी आंखों से जैसे धूआं निकल रहा हो। उसने चारों ओर देखा, पुत्र-वधु को देखा, पोते की ओर देखा ओर नजरे नीचे करते हुए खून के आंसू कलेजे के कासे मे बहाती चली गई शायद अपने पति की याद में, जैसे पति उसको आर्शीवाद दे रहा हो, बल दे रहा हो, हिम्मत तथा धैर्य की शक्ति दे रहा हो।
पुत्र-बधु ने जुर्रत से कहा, माँ जी, आज शनिवार है तथा सोमवार हम आपको आश्रम में छोड़ आएंगे। आपकी तैयारी भी कर देते हैं।

रजनी पति को याद करके बुसक-बुसक कर कलेजे की आंखों के जरिए रो कर गुम-सुम सी हो गई। पुत्र-वधु की खुशी तथा सास के आंसू दो विपरीत दिशाओं का वर्तमान एक इतिहास को रचने जा रहा था।

रात बिस्तर पर पड़ी रजनी सोच रही थी, काश! आज वह जिंदा होते, मेरी ओर कोई आंख उठा कर नहीं देख सकता था। वह घर मेरा होना था जो आज मेरा नहीं। मेरा तो कुछ भी नहीं है आज यहां। वह मन ही मन सोचने लगी, पुत्र-वधु से तो दूर हो सकती हूं परन्तु पोते से दूर जाना तो एक मौत (मृत्यु) है। रवि के बगैर में जिंदा नहीं रह सकती। रवि मेरा दिन भी, दोपहर भी, रात भी। मेरी नस-नस में रवि है।

वह सोचने लगी, परमात्मा कौन से जन्म का बदला ले रहा है मुझ से। जीते जी सब कुछ खो रहा है। माँ बाप बच्चों को संस्कार दे सकते हें, प्यार दे सकते हैं, सभ्याचार दे सकते हैं, शिष्टाचार सिखा सकते हैं परन्तु व्यावहारिक जिंदगी तो बच्चे स्वंय ही अपने आप से, समाज से, चौगिरदे से ही सीख सकते हैं, यहां माँ बाप क्या कर सकते हैं। अनिवार्य नहीं व्यावहारिक तौर पर शिक्षित बच्चे अच्छे हों।

रजनी के मन में कई ख़्याल आते और परोक्ष हो जाते। जिंदगी के क्या अर्थ हैं, उसकी समझ से बाहर हो गए। सोमवार को रजनी को वृद्धाश्रम में छोड़ आए। पोता गुम-सुम था, जैसे उसका कीमती जान से प्यार खिलौना गुम हो गया हो। कुछ बोल नहीं रहा था। उसने अपनी माँ से उदास मुद्रा में कहा, दादी माँ को वहां क्यों छोड़ आए हो? इतना कहने की देर थी कि उसकी माँ ने जोर से एक थप्पड़ उसके मुंह पर जड़ दिया। उसका जवाब माँ ने दे दिया था। वह बिलक कर रोता हुआ चुप हो गया। दादी माँ के जाने से जैसे उसकी दुनिया लुट गई हो, जैसे चारों और अंधेरा छा गया हो, जैसे उसके हाथ-पैर सन (सून) हो गए हों। जिस्म पत्थर हो गया हो तथा उदासी

उसके जिस्म का हिस्सा बन गई हो। रजनी अब वृद्धाश्रम में रहने लगी। वहां वह सुबह शाम मन्दिर में जाती, अपने पोते के दर्शन कृष्ण भगवान की मूर्ति में करने के लिए। कृष्ण भगवान की मूर्ति को चूमती, प्यार करती, देख-देख रोती, घुट-घुट कर छाती से लगाती। पूजा अर्चना करती ना थकती। अपनी ममता उडेल देती।

आश्रम में रह कर उसने धार्मिक प्रवचन शुरु कर दिए थे। उच्च शिक्षित होने के कारण, उसको धार्मिक ज्ञान बहुत था। सारा आश्रम उसका श्रद्धालु बन गया। सभी महिलायों में एक जींवत क्रान्ति खड़ी कर दी। जीवन के अर्थ ढूढ़ लिए। धार्मिक प्रवचन उसका आसरा बन गए। किस्मत को कोसना छोड़ कर उसने हिम्मत के भगवान हृदय में रख लिया।

रजनी पति की याद कलेजे में लेकर अपनी मंजिल की ओर बढ़ती चली गई। कभी-कभी जब पुत्र वधु और पोता उसे मिलने आते तो वह पोते की दबी हुई भावनाओं को समझती परन्तु वह चुप रहती। पोते से दूरी बना कर रखती थी। कहीं मोह-ममता उसकी उदासी बन कर उसकी सेहत तथा पढ़ाई का नुकसान न कर देवे। जब पोता चला जाता तो वह कमरे में अकेली बैठ कर रोती रहती और फिर स्वयं को हौसला-धैर्य देकर फिर अपनी सारी टूटी हुई हिम्मत को इक्टठा करके झूठी सात्वना में उतर जाती। इस तरह वृद्धाश्रम में कुछ वर्ष ही गुज़ारे थे कि रजनी सख़्त बीमार हो गई। रजनी ने वृद्धाश्रम की प्रभारी महिला को विनय करते हुए कहा, मैं अपने पुत्र से मिलना चाहती हूं। उसको बुलाओ।

रजनी के पुत्र को फोन पर संदेश दे दिया गया, राजेश आपकी माता जी सख़्त बीमार हैं। आपको मिलना चाहती हैं। राजेश ने कहा, आज बुधवार है को मैं छुट्टी वाले दिन रविवार मिलने आऊंगा। रविवार राजेश अकेला ही माँ को मिलने के लिए आया तो राजेश ने माँ को देखते हुए कहा,

माँ, आपने मुझे याद किया।
सेहत तो ठीक है ना ?
हां, पुत्र ठीक ही हूं।
माँ ने कहा, पुत्र मैं तुझे कुछ कहना चाहती हूं।
हा, माँ बताएं।
पुत्र, यहा गर्मी बहुत है, यहां मेंरे कमरे में एक ए.सी. लगवा दो, पंखे की हवा बहुत गर्म होती है। यहां रोटी ठंडी मिलती है, एक ओवन लगवा दे।
खाना भोजन ठंडा होने की वजह से कई बार भूखा ही सोना पड़ता है। पुत्र, यहां गर्म पानी पीने को मिलता है, एक छोटी सी फ्रिज ला दे। यहां बैडॅ पुराने हैं, नींद नहीं आती, पुत्र, यह सब चीज़े ला दे।
राजेश माँ की बाते सुन कर आश्चर्य एवं अक्रोश से बिहबल होकर माँ से कहने लगा, माँ, कई वर्षो से तू यहां रह रही है। तूने कभी भी इन चीज़ों की पहले डीमांड नहीं की परन्तु अब जब के तू मरणासन्न दशा में है तो अब अन चीज़ों के लिए लालसा क्यों ? क्या ऐसा व्ययभार निरर्थक नहीं है।
माँ ने ममता और स्नेह से कहा, पुत्र, नहीं, यह बात नहीं हैं, यहां बहुत सी तकलीफें हैं। मुझे तेरा ख़्याल है पुत्र, क्योंकि तेंरे बच्चों ने भी कल को तुझे यहां छोडने आना है। तुझे कोई तकलीफ ना हो मेंरे लाडले।

आज तक

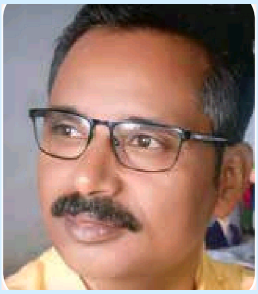

टीकेश्वर सिन्हा " गब्दीवाला"
घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़)

एक मनोविज्ञान के छात्र ने अपने सेवानिवृत्त अध्यापक पिता से पूछा- " बाबूजी ! मैंने एक उदाहरण से सुख की परिभाषा लिख ली है । अब मुझे स्वयं से ही दुख की परिभाषा लिखनी है। आप एकाध उदाहरण बताइए दुख का ?"

"ठीक है। सुनो।" अध्यापक पिता बोले- "मेरे एक मित्र बंशीलाल की पत्नी का छः महीने पहले स्वर्ग वास हुआ है। पत्नी के जाने के चार महीने के बाद उसके छोटे बेटे और बहू आकाशीय वज्रपात से चल बसे। उनका एक दूधमुँहा बच्चा है। बड़ा बेटा कैंसर से जूझ रहा है। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया है कि उसका बचना मुश्किल है। उसके भी दो छोटे बच्चे हैं। बंशीलाल अपने घर तक को गिरवी रख चुका है। एक मात्र छोटी सी खेत को परसों की बारिश ने पूरी तरह बर्बाद कर दिया है। इस उदाहरण से तुम दुख की परिभाषा लिख सकते हो। तुम अच्छी तरह...।" आगे कुछ और बता ही रहे थे कि पिता का गला भर्रा गया।

अपने आँसुओं को अंदर धकेलते हुए पिता को पुत्र देखता ही रह गया। वह दुख की परिभाषा आज तक नहीं लिख पाया।

दहेज गाथा

रमेश मनोहरा
शीतला माता गली जावरा (म.प्र.)
457226, जिला रतलाम

दे दहेज जो खूब ही, करें आप सम्मान
कम मिला हो तो करिये, उसका ही अपमान

लड़का है वो आपका, नगद टका श्रीमान
पूछ परख होगी सदा, खूब मिलेगा दान

सदा रहे आप तनकर, झूके मत श्रीमान
मान रखेंगा आपका, देकर दहेज मान

लोगे अधिक दहेज यदि, कहलाओगे मीर
चमकेगी फिर देखिये, बंद पड़ी तकदीर

मन मुताबिक दहेज हो, पाओगे भरपूर
समधि होंगे कभी नहीं, देख आपसे दूर

क़ानून भी देख बना, माने तू अधिकार
होगा फिर रमेश सदा, सुखी भरा परिवार

कम दहेज मिलता तुझे, करें नहीं स्वीकार
मांगे जितना भी अगर, तोड़े संबंध यार

आदिकाल से चल रहा, देखो यही दहेज
लेने वाला ना करें, कोई भी परहेज

दहेज मिलता खूब ही, बढ़ती इससे शान
प्रतिष्ठा बढ़े आपकी, समाज में श्रीमान

ख़्वाहिश–ए–दिल

प्रिया देवांगन "प्रियू"
गरियाबंद, छत्तीसगढ़

शर्मा जी! हमें और हमारे बेटे राहुल को आपकी बेटी नेहा पहली नजर में ही पसंद आ गई। इस बारे में आप लोगों का क्या विचार है? हम जल्द ही जानना चाहते हैं।

जी....जी... तिवारी जी; ये तो बहुत ही शुभ समाचार है। शादी पक्की हो इससे पहले मैं आप लोगों के समक्ष अपनी कुछ बातें रखना चाहता हूँ।

अरे.....! क्या बात है शर्मा जी; आप निश्चिंत रहिए। हम दहेज–वहेज के पक्ष में बिल्कुल नहीं हैं आप अपना दिल ठंडा रखिए; इस मामले में। तिवारी जी हँसते हुए बोले।

दरअसल, बात यह है कि हमारी बेटी नेहा को कत्थक नृत्य बहुत पसंद है। नेहा हर प्रतियोगिता में अपनी सहभागिता प्रदान करती है। नेशनल–इंटरनेशनल तक के कंपीटिशन में फर्स्ट आई है।दूर –दूर देश–विदेशों में इसके नृत्य की प्रशंसा होती रहती है। मेरी ख़्वाहिश–ए–दिल है कि मेरी बेटी शादी के बाद भी अपना सपना पूरा करें और हमारा नाम यूँ ही रौशन करती रहे।

मि.और मिसेज तिवारी जी एक – दूसरे को देख खुसुर–फुसुर करने लगे। नेहा के हृदय में चिंता की काली घटाएं उमड़ रही थीं; चेहरे में फीकापन दिखाई दे रहा था क्योंकि रिश्ता बहुत अच्छा

था; लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी है सपनों को उड़ान देना!

थोड़ी देर बाद मिसेज तिवारी सोफा से उठ हाथ आगे कर बोली– देखिए भाई साहब; आजकल की लड़कियाँ घर में कैद नहीं रहना चाहती हैं, इन लड़कियों से हम भलीभांति परिचित हैं। लेकिन हमारी नेहा तो....... बीच में ही टोकती हुई मिसेज शर्मा बोली। मिसेज शर्मा......! मेरी बातें अभी पूर्ण नहीं हुईं। आप लोगों को क्या लगा? हम आपकी बातें सुन रिश्ते से इनकार कर देंगे; सभी की नज़रें मिसेज तिवारी पर टिकी हुईं थीं। इतना सुनने के बाद नेहा की धड़कनें और बढ़ने लगीं।

नहीं–नहीं..... भाई साहब! हमारी सोच इतनी छोटी नहीं है कि हम नेहा के सपनों को कैद कर रसोई तक ही सीमित रखें। हमारी बेटी नहीं है तो क्या हम आपके हृदय की बातें नहीं समझ पाएंगे? मैं भी तो किसी की बेटी हूँ न? आप अपनी सारी चिंताओं को डस्टबिन में फेंक आइए; और हाँ अब से नेहा हमारी हुई। ऐसा बोलकर मिसेज तिवारी ने नेहा को गले से लगा लिया। वाह! क्या बात है आज मैं धन्य हुआ; आप लोगों से रिश्ता जोड़ कर। तिवारी जी आप लोगों ने हम सब का मान रखा। शर्मा जी के साथ–साथ उनके घर के सभी लोगों के होठों पर हँसी और आँखों में खुशियों के मोती चमकने लगे।

जाड़े की धूप

सुभाष चन्द्रा
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

सुबह जब आँखें खुली
तो देखा
हल्की सी धूप मेरे कमरे में
झांक रही थी
जल्दी से उठ
रसोई के केटली में गर्म पानी कर
पीकर बेंत की छड़ी लेकर
निकल पड़ा धूप को पकड़ने

ठंडी हवा के झोंके
पेड़ों के बीच लुका छिपी कर
लालिमा लिए सूरज की किरणें
धरा पर इधर उधर बिखर कर
मेरे साथ टहलने लगीं

पसीने से लथपथ लौटा
थोड़ा व्यायाम किया
फिर रसोई में दो कप चाय बनी
एक कप मेरी और
एक कप रानी यानी बाबू जी के
बहू के लिए
तब तक धूप जवान हो चली थी

उपर कमरे में आया तो पाया
वह मेरी कुर्सी पर अलमस्त
पसरी हुई थी
मैं उसके बगल में जा बैठा
घुटनों पर शरीर पर तेल मला
पर उस पर कोई असर नहीं हुआ
न वह शरमाई न डरी
बल्कि मुझे सहलाने लगी
प्यार से
उसका गुदगुदाना इस मौसम में
अच्छा लगा

दोपहर में खाना खाकर
आया तो देखा वह
बरामदे में बेखबर बेसुध हो
बिना चादर के फैल कर
गहरी नींद में थी
मुझे अच्छा नही लगा
उसे आकुल करना
मैंने भी अपने आप को
छिपा लिया कम्बल मे

शाम होते होते वह
न जाने कहाँ जा छिपी
छोटे बालकों की तरह
करवटें बदलते हुए एक सिरे से
दूसरे सिरे पर जाकर गायब हो गई
मैं उसे ढूढ़ता रहा

बच्चों ने बताया कि
पैगाम दे गई है
कल फिर आयेगी मिलने
पर जरा देर से
बादलों से मुलाकात कर
कोहरे को हटा कर
कमरे में मेरे झांकेगी जरूर
चाय के साथ मेरा इंतजार करना
उसको भी अच्छा लगता है

गर्मी वाली गर्मी उसमें नही थी
अब वह प्रौढ़ हो चली थी
थोड़ी शांत थोड़ी समझदार थी
जाड़ों मे अक्सर वह आकर
गले से लिपट जाती है
उसका यह अंदाज मुझे भी
चुलबुला बना देता है।

हिसाब किताब

मीरा जैन
516,साँईनाथ कालोनी . सेठीनगर
उज्जैन . -(म.प्र.) पिन -456010

महिनो बाद आज फुर्सत के क्षणों में रीता डायरी के पन्ने पलट रही थी जिसमें विकास प्रतिमाह नियमित होने वाले खर्चों का हिसाब लिखता था । डायरी के पन्ने पलटते हुए उसका पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया-

"विकास ओ विकास !"

" क्या हुआ,क्यों चिल्ला रही हो?"

विकास मुझे एक बात तो बताओ अपने हॉकर की दुर्घटना में मृत्यु हुए छः माह से अधिक हो गए तब से पेपर भी तुम उसके घर जाकर लाते हो क्योंकि उसके यहां बांटने वाला कोई नहीं है पर मैग्ज़ीन तो बंद ही है फिर हर माह दो सौ मैगजीन के किसे देते हो पहले तो सौ ही रुपए देते थे यह उलटी गंगा कैसे बह रही है?"

" रीता ! नाराज क्यों हो रही हो यह बात शांति से भी तो पूछी जा सकती थी। यह सत्य है कि जब से हॉकर की मृत्यु हुई है तब से अपने यहां मैगजीन नहीं आ रही है फिर भी अब सौ की जगह दो सौ रुपए इसलिए खर्च हो रहे हैं क्योंकि हॉकार की मृत्यु हुई है उसकी दस माह की बालिका अभी इस संसार में है।"

बचपन

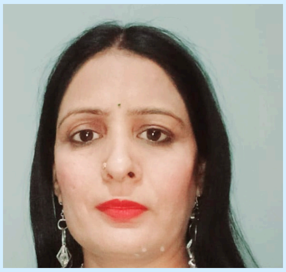

मंजू जाखड़
झज्जर (हरियाणा)

शबनमी ठंडी सड़क पर
नंगे पैर भागता-दौड़ता
एक ढाबे पर रोते-रोते
बर्तन धोता बचपन देखा

इस दृश्य से जगती आँखों में
एक भयानक स्वप्न आया
अशिक्षा,गरीबी के दानव से
खतरे में धरा का भविष्य देखा

आँधी ले गई खेल-खिलौने
रंगी किताबें काली पड़ गई
बेरौनक आँगन, गलियारे
शिक्षालय को गिरते देखा

प्रश्नचिह्न बन गई कलम
जब नन्हे हाथों ने बोझ उठाया
आँखें ढूँढ़ रही थी बस्ता
पलकों से स्याही गिरते देखा

ये मजबूरी पिता की है
या अनदेखी सभ्य समाज की
सपनों से सौदा करते
देश की भावी उम्मीद को देखा

Pranti India
9 789334 097054

प्रान्ति इंडिया एण्ड कम्पनी के लिए संपादक/प्रकाशक ए. के. प्रसाद द्वारा जे11/125 ए-1, ईश्वरगंगी, वाराणसी - 221001 से प्रकाशित।